Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. अखिलानंद पाठक प्राचार्य, श्री जैन आदर्श पीजी महाविद्यालय, नोखा, बीकानेर, राजस्थान.

ABSTRACT:

भारत अब ग्लोबल साउथ में अपनी भूमिका सिद्ध कर रहा है। ऐतिहासिक संदर्भ में 'ग्लोबल साउथ' शब्द का प्रयोग प्रायः उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत और पूर्व उपनिवेशित देशों एवं विकसित पश्चिमी देशों के बीच आर्थिक असमानताओं को उजागर करने के लिए किया जाता है। यह आर्थिक वृद्धि और विकास में इन देशों के सामने आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करता है।

भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी न केवल इन देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास में सहायक है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह साझेदारी भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक सिद्ध हो रही है, जिसमें निर्यात में वृद्धि, निवेश के अवसर, राजनीतिक प्रभाव, रोजगार सृजन और कौशल विकास प्रमुख हैं। इसके माध्यम से भारत एक सशक्त वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है और उसके आर्थिक विकास के रास्ते खुल रहे हैं।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, भारत, संस्कृतियां, पल्लवित, पुष्पित, आमजन, उत्सुकता, जनसंख्या, गिरमिटियों, जनसंख्या, तीसरी दुनिया, आवाज, शीत युद्ध, औपनिवेशिक, भागीदारी, साम्यवादी, आर्थिक संरक्षण, कूटनीति।

प्रस्तावना

ग्लोबल साउथ विकासशील देशों का एक संगठन है, यह संगठन और ग्लोबल साउथ शब्द कुछ वर्ष पहले ही चर्चा में आया और विश्व स्तर पर यह शब्द न सिर्फ चर्चित हुआ वरन् इसको लेकर आमजन में भी उत्सुकता बनी हुई है। हम यहां ग्लोबल साउथ और भारत तथा वैश्विक स्तर पर ग्लोबल साउथ में भारत की भूमिका, प्रभाव और अर्थव्यवस्था में आने वाले बदलावों को देख समझ रहे हैं।

ग्लोबल साउथ के देश भले ही आर्थिक रूप से थोड़े कमजोर रहे हैं किन्तु यहां जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग निवास करता है। यहां विभिन्न संस्कृतियां पल्लवित और पुष्पित होती आई हैं। भारत के सदियों पूर्व इन देशों के साथ संबंध रहे हैं। इन देशों का आदिम धर्म हमारे प्राचीन धर्म से कुछ मेल खाता है। बाद में जब अंग्रेजों ने गिरमिटियों के रूप में यहां से मजदूरों को इन देशों में भेजा तो एक बार पुनः इन देशों के साथ भारत का संबंध जुड़ा। यहां से जाने वाले गिरमिटिए भारत की भाषा, संस्कृति और धर्म को इन देशों में लेकर गए। वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा इन देशों के साथ फिर एक नया अध्याय जोड़ा जा रहा है। इन देशों को पहले तीसरी दुनिया के देश या थर्ड वर्ड कहा जाता रहा। अपने ग्लोबल साउथ के देश कहां जा रहे है और भारत इनकी आवाज बन रहा है।

ग्लोबल साउथ शब्द तीसरी दुनिया के देशों से विकसित हुआ है जो देश औपनिवेशिक और शीत युद्ध के बाद अपनी कमजोर अर्थव्यवस्था के कारण गरीब हो गए। जिनकी प्रति व्यक्ति आय कम हो गई और जो पंजीवादी देशों से अलग-अलग हो गए। उनको तीसरी दनिया के देशों में अर्थात विकासशील देशों में माना गया है। साम्यवादी रूस के पतन के बाद समकालीन दुनिया दो भागों में विभाजित दिखाई देने लगती है। ग्लोबल नॉर्थ विकसित देश एवं ग्लोबल साउथ विकासशील देश हालांकि यह विभाजन भौगोलिक विभाजन से थोड़ा अलग है क्योंकि जापान, कोरिया, न्यूजीलैंड जैसे देश ग्लोबल नॉर्थ से जुड़े हैं परंतु समय के साथ-साथ थर्ड वर्ड शब्द यानी तीसरी दुनिया में बदलाव तेजी से हो रहा है।

ग्लोबल साउथ के देशों की अर्थव्यवस्था में न सिर्फ तेजी से बढ़ोतरी हो रही है अपितु यह देश अपना समूह बनाकर पूरे विश्व में अपनी नई पहचान बनाने में लगे हैं और इन देशों के 2047 तक अपने आप को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया है जिसमें भारत अग्रणी रूप में शामिल है।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि पूर्व के गुटनिरपेक्ष राष्ट्र ही अपने आप को आर्थिक संरक्षण प्राप्त कर एक समूह के रूप में विकसित होने का प्रभावी कदम उठा रहे हैं। ग्लोबल साउथ में बदलती परिस्थितियों के बीच गति कुछ वर्षों में भारत ने अपनी प्रतिष्ठा को न सिर्फ स्थाप त किया है वरन् अपनी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के कारण ग्लोबल साउथ को नेतृत्व प्रदान करने की दावेदारी भी पेश की है।

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में शामिल हो गई है और आज इसका स्थान पांचवा माना जा रहा है। इसीलिए भारत ग्लोबल साउथ का एजेंडा भी तय कर रहा है। विकसित राष्ट्र के सामने ग्लोबल साउथ वर्ग का नेतृत्व करने के प्रयास में ही भारत में 2023 में जी-20 का शिखर सम्मेलन आयोजित किया। जी-20 सम्मेलन में भारत ने तीसरी दुनिया के देशों की समस्याओं को प्रबल एवं पुरजोर तरीके से रखा। हालांकि भारत अपने आपको कभी भी ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में दिखने के बजाय सामूहिक विकास को लेकर एक टीम के रूप में चलने का प्रयास करता है। भारत ने सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2015 में 2030 तक गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण आदि से निपटने की चुनौतियों को स्वीकार किया है एवं इन सबके समग्रता के साथ-साथ सतत विकास लक्ष्य को पाने और संतुलन बनाने में भारत आगे रहा है।

भारत बुनियादी ढांचे स्वास्थ्य सेवा तथा तकनीकी क्षमता के क्षेत्र में भी अपने आप को पूरी तरह से स्थापित करने में लगा है। हालांकि अभी भी विकसित और विकासशील देशों में इन मानदंडों में काफी अंतर दिखाई देता है। भारत ने अफ्रीकी, लैटिन अमेरिका और एशिया के देशों के साथ विभिन्न द्विपक्षीय समझौते एवं साझेदारी की है जो प्रौद्योगिकी एवं क्षमता निर्माण पर केंद्रित है। साथ ही भारत ने ब्रिक्स देशों के साथ भी समझौते कर अपनी चतुर्दिक योजना को सफलभूत किया है।

जी-77 संगठन में भी भारत की सक्रिय भागीदारी रही है एवं उसने कई प्रकार के व्यापारिक समझौते किए हैं। विश्व व्यापार संगठन डब्ल्यूटीओ की समस्याओं को दूर करने में भारत ने विशेष पहल की है। 2023 में बौद्धिक संपदा, आनुवंशिक संसाधन आदि विषयों को लेकर कई प्रयास भारत द्वारा हुए हैं। कोविड में वैक्सीन कूटनीति, आपदाओं में मानवीय सहायता, संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद् में सुधार की मांग, सांस्कृतिक महोत्सव के द्वारा पावर डिप्लोमेसी कर भारत ने अपने आप को न केवल ग्लोबल साउथ में बल्कि पूरे विश्व में पूरी तरह से साबित किया है।

भारत पिछले 10 वर्षों में वैश्विक स्तर पर विश्व के नेताओं के साथ विभिन्न बैठकों के द्वारा कई देशों के बीच शांति वार्ता की पहल कर, वह चाहे रूस-यूक्रेन युद्ध की बात हो या गाजा-इजरायल संघर्ष, भारत नेअपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है जिसके कारण आज पूरा विश्व भारत के नेतृत्व क्षमता का लोहा मानने लगा है। विश्व में तीसरे विश्व युद्ध की संभावनाओं के बीच भारत को एक ग्लोबल लीडर के रूप में देखा जा रहा है जो विभिन्न देशों के बीच शांति वार्ता करवाने में सफल हो सकता हैऔर चाहे रूस हो चाहे ईरान या इजरायल अथवा यूक्रेन सभी भारत को महत्व दे रहे हैं। अमेरिका की नजरे भी भारत की इस कूटनीति पर टिकी हुई

है।

मुद्रा भंडारण के क्षेत्र में भारत ने अपने आप को बेहतर स्थिति में ला खड़ा किया है। आयात निर्यात का संतुलन तथा मुद्रा विनिमय को भी भारत ने एक तरह से स्थिर किया है। भारत में दस वर्षों में लगातार निवेश बढे हैं और विश्व की बड़ी-बड़ी कंपनियां भारत में इस समय अपने आप को निवेश करने के लिए अनुकूल माहौल पा रही हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्लोबल साउथ क्षेत्र में भारत सशक्त रूप में उभर कर आया है और विश्व में भी इसकी अच्छी भागीदारी है। इस समय सभी देश अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने में लगे हैं वहीं भारत की अर्थव्यवस्था भी तेजी से बढ़ रही है, उससे कुछ ही वर्षों में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी ताकत बनने की स्थिति में आ जाएगा। इसमें भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती सक्रियता सहयोग कर रही है।

ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है कि ग्लोबल साउथ में भारत एक बहुत ही बेहतर खिलाड़ी है और इसकी वैश्विक पहचान निरंतर ही बढ़ती जा रही है। वह दिन दूर नहीं जब भारत पूरे विश्व का नेतृत्व ना सिर्फ विदेश नीति, शांति व्यवस्था में वरन् अर्थव्यवस्था में भी करेगा।

REFERENCES

1. सुरेंद्र कुमार - इंडिया एंड दी ग्लोबल साउथ : प्रोस्पेक्टस एंड चैलेंजिस, विजडम ट्री, 2024

2. सुजान चिनॉय, विजय चौथाईवाले, उत्तम कुमार सिन्हा - मोदी : वेटिंग ए ग्लोबल ऑर्डर इन फ्लेक्स, विजडम ट्री, 2023

3. ए. के. मुनीर- वैश्विक दक्षिण और साहित्य, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2022

4. सुब्रमण्यम जयशंकर- परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति , प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2022